REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 14 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2025

"उपन्यास के तत्व और शैली की दृष्टि से अज्ञेय के उपन्यासों का अध्ययन"

भावना सिंह परिहार
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
डॉ. क्षिप्रा द्विवेदी
प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश –

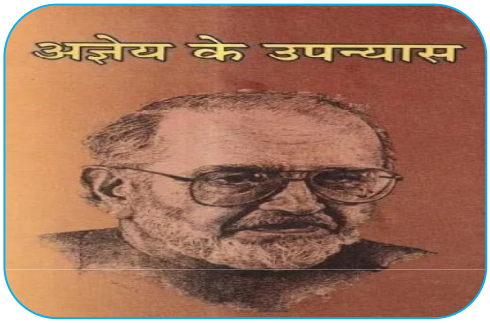

अज्ञेय का साहित्य भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है और उनके उपन्यासों में मानव अस्तित्व, मानसिक संघर्ष और सामाजिक संबंधों का गहरा विश्लेषण मिलता है। उनके उपन्यासों में दार्शनिक विचार, अस्तित्ववाद और आंतरिक द्वंद्व का प्रमुख स्थान है। अज्ञेय के लेखन में साहित्यिक शैली का अद्वितीय मिश्रण देखने को मिलता है, जिसमें काव्यात्मकता, प्रतीकवाद और संवेदनशीलता का समावेश है। इस शोधपत्र में अज्ञेय के उपन्यासों के तत्वों और शैली का अध्ययन किया गया है। उनके उपन्यासों में समाज और व्यक्ति के संघर्ष, मानसिक द्वंद्व, अस्तित्ववादी प्रश्न और नैतिकता पर गहरे विचार प्रस्तुत किए गए हैं। उनकी शैली में संकेत, प्रतीक और दार्शनिक विचारों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है, जिससे उनके उपन्यासों को साहित्यिक दृष्टि से समृद्ध और अनूठा बनाया गया है। अज्ञेय के उपन्यास न केवल पाठकों को समाज और जीवन के गहरे पहलुओं पर सोचने के लिए प्रेरित करते हैं, बल्कि उनके लेखन में व्याप्त संवेदनशीलता और गहरे विचारधारा भी पाठकों के मानसिक और बौद्धिक विकास में सहायक होते हैं। उनके साहित्यिक योगदान के कारण उनका स्थान हिंदी साहित्य में हमेशा महत्वपूर्ण रहेगा।

मुख्य शब्द – अज्ञेय, उपन्यास, मानसिक संघर्ष, समाज, व्यक्तित्व, एवं नैतिकता।

प्रस्तावना –

हिंदी साहित्य में अज्ञेय (अशोक वाजपेयी) का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। वह न केवल एक प्रसिद्ध कवि, बल्कि एक महत्वपूर्ण उपन्यासकार और विचारक भी रहे हैं। अज्ञेय का लेखन जीवन के गहरे और जटिल पहलुओं को उजागर करता है, जिसमें व्यक्तिगत संघर्ष, मानसिक द्वंद्व, अस्तित्ववादी प्रश्न और सामाजिक व्यवस्था के प्रति आलोचना प्रमुख हैं। उनका साहित्य विविधता से भरा हुआ है और उन्होंने साहित्य के विभिन्न रूपों – कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना और यात्रा वृत्तांत में योगदान दिया है।

अज्ञेय का लेखन मानव अस्तित्व, आंतरिक द्वंद्व और जीवन के उद्देश्य को तलाशने की एक निरंतर प्रक्रिया है। उनका उपन्यास लेखन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने उपन्यासों के माध्यम से समाज और व्यक्ति के बीच जटिल रिश्तों, जीवन के उद्देश्य, और मानसिक व भावनात्मक संघर्षों का गहन विश्लेषण किया।

इस शोधपत्र का उद्देश्य अज्ञेय के उपन्यासों के तत्वों और उनकी शैली का विस्तृत अध्ययन करना है। अज्ञेय के उपन्यासों में न केवल व्यक्ति के मानसिक संघर्ष को देखा जाता है, बल्कि उनके द्वारा व्यक्त किए गए दार्शनिक विचार, सामाजिक आलोचना और साहित्यिक शैली भी महत्वपूर्ण है। इस शोधपत्र में हम अज्ञेय के प्रमुख उपन्यासों का विश्लेषण करेंगे, उनके लेखन की विशेषताओं को समझेंगे और यह जानने की कोशिश करेंगे कि उनका साहित्य हिंदी साहित्य में क्यों अनूठा और प्रभावशाली बना।

अज्ञेय के उपन्यासों में उनके काव्यात्मक दृष्टिकोण, विचारशीलता और गहरी संवेदनशीलता का समावेश है, जो उन्हें हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण रचनाकार के रूप में स्थापित करता है। उनके उपन्यासों में न केवल मनुष्य के अस्तित्व की खोज है, बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत प्रश्नों पर भी गंभीर विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

अज्ञेय के संवाद सरल, लेकिन गहरे अर्थ वाले होते हैं। पात्रों के संवाद उनके विचारों, संघर्षों, और दार्शनिक दृष्टिकोण को प्रकट करते हैं। संवाद कथानक को आगे बढ़ाने के बजाय, पात्रों की आंतरिकता को उजागर करने का माध्यम बनते हैं। उदाहरण – 'अपने अपने अजनबी' के संवाद संबंधों और अस्तित्व के सवालों को सामने रखते हैं।

अज्ञेय के उपन्यासों में वातावरण पात्रों की मनोदशा और विचारों के साथ घुला–मिला होता है। उनके उपन्यासों में प्राकृतिक परिवेश और पात्रों के मनोभावों का गहरा संबंध है। उदाहरण – 'नदी के द्वीप' में नदी का परिवेश पात्रों की भावनात्मक स्थिति को परिलक्षित करता है। 'शेखर : एक जीवनी' में जेल का वातावरण शेखर के मानसिक संघर्ष को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाता है।

अज्ञेय की शैली में दार्शनिक विचारधारा और आत्मविश्लेषण का गहरा प्रभाव है। उनकी रचनाएँ मानव अस्तित्व, स्वतंत्रता और आत्म–साक्षात्कार पर केंद्रित हैं। अज्ञेय की गद्य शैली में काव्यात्मकता और बिंबात्मकता का विशेष स्थान है। भाषा न केवल कथा को आगे बढ़ाती है, बल्कि वातावरण और भावनाओं को भी सजीव करती है।

विश्लेषण –

अज्ञेय के उपन्यासों में उपन्यास के तत्वों और शैली का अनूठा मेल दिखाई देता है। उन्होंने कथा को भावनात्मक गहराई, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और दार्शनिक चिंतन से समृद्ध किया। उनकी शैली हिंदी उपन्यासों में न केवल आधुनिकता का परिचायक है, बल्कि यह साहित्यिक उत्कृष्टता का भी मानदंड है। उनकी रचनाएँ हिंदी साहित्य को वैश्विक दृष्टिकोण और समकालीन भावबोध प्रदान करती हैं।

कुछ विद्वानों ने उपन्यास के आठ तत्वों की विवेचना की है, किन्तु अधिकांश विद्वान उपन्यास में छह तत्वों को ही मानते हैं –

1. कथावस्तु या कथानक
2. पात्र और चरित्र–चित्रण
3. कथोपकथन या संवाद
4. भाषा–शैली
5. देशकाल और वातावरण तथा
6. उद्देश्य।

इस प्रकार उपन्यासकार अज्ञेय की औपन्यासिक कला की विवेचना करते हुए हम यहाँ स्पष्ट करने का भरपूर प्रयास करेंगे कि उनके उपन्यासों में उपर्युक्त तत्वों से शैली का स्वरूप किस प्रकार निखरा है।

अज्ञेय के उपन्यासों की भाषा–शैली – भावाभिव्यक्ति का माध्यम भाषा है और उस माध्यम के प्रयोग की रीति शैली है। अतः प्रत्येक उपन्यासकार की उपन्यास कला का मूल्यांकन करते समय उनकी भाषा शैली का विश्लेषणात्मक परिचय भी आवश्यक हो जाता है। यों भी विद्वानों ने औपन्यासिक तत्वों में भाषा शैली नामक एक अलग तत्व का उल्लेख किया है। उपन्यास की भाषा शैली के तीन पक्ष होते हैं –

1. कथोपकथन या संवाद
2. स्थान, व्यक्ति, घटना का वर्णन
3. उपन्यासकार की ओर से विशेष उपदेश, संदेश अथवा समाज, धर्म, व्यवस्था के प्रति उसका अभिमत।

1. कथोपकथन या संवाद – कथोपकथन को अंग्रेजी में डायलॉग कहते हैं। पात्रों के चरित्र–चित्रण में कथोपकथन का एक प्रमुख स्थान होता है। उपन्यास की सजीवता सफल कथोपकथन पर ही निर्भर करती है। प्रत्येक कथोपकथन सरल, सजीव, मार्मिक, सार्थक तथा पात्रों की सभ्यता और संस्कृति के अनुकूल हो, साथ ही देश और काल का ध्यान रखा जाय – यह योजना उपन्यासकार की प्रतिभा का सूचक है। यह योजना जितनी ही अनुभूतिजन्य होगी, उसका कथोपकथन भी वैसा ही विशिष्ट होगा। कथोपकथन की प्रभावशाली, नाटकीय एवं रोचक होना चाहिए ताकि पाठकों पर अद्‌भुत प्रभाव पड़े। घटनाओं के उत्थान–पतन के साथ कथोपकथन की योजना होनी चाहिए। एक प्रकार से यह वह सूत्र या माध्यम है, जिसके माध्यम से पात्रों का व्यक्तित्व झलक जाता है, उनके व्यक्तित्व में निखार आ जाता है। इसी कथोपकथन के द्वारा पात्रों का मूल्यांकन कर पाना संभव एवं सरल हो जाता है।

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों में संवाद तत्व की पूर्ववर्ती युगों से अधिक महत्व प्राप्त हुआ है और संवादों में प्रायः नाटकीयता की वृद्धि हुई है। इनके लक्षण हैं – लघुता, सजीवता, चुस्ती, प्रवाह, लोक–सुलभ सहज व्याकरण व्यवस्था, अधूरे छूटे कथन, व्यावहारिक शब्दावली, कहीं–कहीं आकस्मिकता, अभिनयोचित स्वाभाविक चांचल्य तथा वक्तृत्व से सहचरित भंगिमा।[1] अज्ञेय के औपन्यासिक संवादों में भी उक्त विशेषताएं पाई जाती हैं। उनके उपन्यास में इन संवादों द्वारा एक ओर तो कथानक का सहज स्वाभाविक विकास हुआ है, तथा दूसरी तरफ पात्रों की चारित्रिक विशिष्टताओं का यह कथोपकथन दर्शनीय है–

शेखर, मैं वापस चली जाऊँ।
कहाँ,
वापस–वहाँ, जहाँ दे दी गई थी।
चकित और आहत स्वर में शेखर ने पूछा, 'शशि क्या कह रही हो तुम–वहाँ वापस। यह क्या अभी हो सकता है।'
हाँ। वे प्यार देना जानते होते तो शायद न हो सकता, पर अभी शायद–हो सकता है। अधिक से अधिक, वह
वापस–वहाँ, जहाँ दे दी गई थी।
चकित और आहत स्वर में शेखर ने पूछा, 'शशि क्या कह रही हो तुम–वहाँ वापस। यह क्या अभी हो सकता है।'
हाँ। वे प्यार देना जानते होते तो शायद न हो सकता, पर अभी शायद–हो सकता है। अधिक से अधिक, वह मैं नहीं पूछता, शशि तुमसे पूछता हूँ–क्या यह अभी हो सकता है– तुम्हारी ओर से अभी–ओह मैं.....शेखर, मैं देख रही हूँ कि मैं तुम्हारे मार्ग में बाधा हूँ, तुम्हें नीचे खींच रही हूँ और वह मैं कभी नहीं होने दूँगी–उससे कहीं आसान है लौट जाना–
तुम कैसी बातें करती हो शशि! मेरी तो बात अभी छोड़ो–तुम लौटने की सोच कैसे सकती हो–
क्यों? अगर उसमें तुम्हारी उन्नति है, तुम्हारी सुविधा है, तो–
और तुम्हारी अपनी आत्मा कुछ नहीं है। ऐसा कोई कुछ नहीं हो सकता, जिसके लिए आत्मा का हनन.....।[2]

इस बात का उल्लेख कर देना मैं यहाँ उचित समझती हूँ कि अज्ञेय के उपन्यास 'नदी के द्वीप' के अधिकतर कथोपकथन रवीन्द्र, डी.एच. लारेंस तथा अन्य पूर्वी एवं पाश्चात्य कवियों की उक्तियों के संदर्भ में ही रचे गये हैं, इसलिए बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं का प्रयोग और उनके अर्थों की आत्माओं का प्रस्तुतीकरण भी उनमें हुआ है। उदाहरणार्थ–

1. कर्स्ड बी द सोशल वान्ट्स दैट इज अगेन्स्ट दि स्ट्रेन्थ ऑफ यूथ।
   कर्स्ड बी द सोशल लाइज दैट वार्प अस फ्राम दि लिविंग ट्रूथ।[3]
2. भाङ्. भाङ्. भाङ्. कारा
   आघाते आघात कर
   अरे आज की गान गेये छे पाखी
   एशे छे रविर कर।[4]

जहाँ तक अज्ञेय की भाषा का सवाल है, हमारा ध्यान सर्वप्रथम इस ओर आकर्षित होता है कि गद्य में काव्य रस का संचार करने में अज्ञेय बहुत कुशल हैं और अपने औपन्यासिक पात्रों के मनोभावों को काव्यमयी भाषा में अभिव्यक्त करने में वह निर्विवाद रूप से सिद्धहस्त हैं। 'शेखरः एक जीवनी' में अज्ञेय ने कवि सुलभ काल्पनिकता को बड़े ही कौशलपूर्ण ढंग से उपन्यास के यथार्थ कथांशों के साथ समायोजित किया है, जिससे रचना में एक अतीव प्रभावोत्पादकता एवं हृदयद्रावक शक्ति का उन्मेष हुआ है। इस उपन्यास के कथानक की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें काल्पनिक और व्यावहारिक भाव–भूमियों का आश्चर्यजनक ढंग से समावेश हुआ है।[5]

इस तरह अज्ञेय के उपन्यासों में प्रायः ललित्यपूर्ण एवं काव्यात्मक भाषा के दर्शन होते है। उदाहरणार्थ–

1. प्रभात.....

पूर्व में एक दिव्य दीप्ति, धुंधली हुई धुंध, शीतल समीर, हंसते हुए ओसकण, मान करती हुई–सी मालती–कलियाँ, पागल गुंजार करते हुए भौंरे, जंगल पर होकर बस्ती की ओर उड़ते हुए असंख्य पक्षी–मैं कल्पना में इन सबको देख सकता हूँ, अपनी कोठरी की नंगी दीवार पर बिखरे हुए लाल प्रकाश के एक चौकोर टुकड़े में.....।[6]

2. मेच्छादित आकाश, प्रकाशहीन सायंकाल पवन अचंचला। चंचला भी अदृश्य। और आज वह पक्षी भी नहीं है जो उड़ते–उड़ते पंख टूट जाने से विवश हो गिरता जा रहा था, पर अपना स्थान पाने के लिए छटपटा तो रहा था, छटपटा तो रहा था .....।[7]

अज्ञेय की भाषा अलंकृत भी है। उनके उपन्यासों में अनेक स्थलों पर उपमा अलंकार का स्वाभाविक प्रयोग हुआ है तथा प्रतीक पद्धति का सम्बल लेकर कठिन मनोभावों या गहन मनोभावों को, चिंतन को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया गया है। उदाहरणार्थ, 'नदी के द्वीप' में तो व्यक्तियों का मिलन प्रतीक द्वारा ही अंकित है–''हमीं द्वीप हैं, मानवता के सागर में व्यक्तित्व के छोटे–छोटे द्वीप, और प्रत्येक क्षण एक द्वीप है, खासकर व्यक्ति और व्यक्ति और व्यक्ति के सम्पर्क का, कांटेक्ट का प्रत्येक क्षण अपरिचय के महासागर में एक छोटा किन्तु मूल्यवान् द्वीप।''[8]

इसी तरह अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में अंग्रेजी, बंगला और हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों के उदाहरण प्रस्तुत कर अपनी भाषा को अत्यधिक काव्यात्मक बना दिया है तथा कहीं–कहीं तो कविताओं के उद्धरणों के अभावों में अपने मनोभावों को व्यक्त ही नहीं कर सकेंगे।

वर्णनात्मक शैली का वैचित्र्यः – अज्ञेय की भाषा–शैली विवेचनात्मक भी है। यह विवेचनात्मकता तब उनके पात्रों में पाई जाती है, जब वे दार्शनिक चिंतन, तर्क–वितर्क या आत्म–विश्लेषण का उल्लेख करने लगते हैं। उदारणार्थ–

1. ईश्वर ने सृष्टि की।

सब ओर निराकार शून्य था, और अनंत आकाश में अंधकार छाया हुआ था। ईश्वर ने कहा, 'प्रकाश हो' और प्रकाश हो गया। उसके आलोक में ईश्वर ने असंख्य टुकड़े किये और प्रत्येक में एक–एक तारा जड़ दिया। तब उसने सौर–मण्डल बनाया, पृथ्वी बनाई। और उसे जान पड़ा कि उसकी रचना अच्छी है।

तब उसने वनस्पति, पौधे, झाड़–झंखाड़, फल–फूल, लता–बेलें लगाईं, और उन पर मंडराने को भौर और तितलियाँ, गाने की झींगुर भी बनाए।

तब उसने पशु–पक्षी भी बनाए। और उसे जान पड़ा कि उसकी रचना अच्छी है।

लेकिन उसे शांति न हुई। तब उसने जीवन में वैचित्य लाने के लिए दिन–रात, आंधी–पानी, बादल–मेह, धूप–छांह इत्यादि बनाये और फिर कीड़े मकोड़े, मकड़ी–अच्छर, बर्रे–बिच्छु और अंत में सौंप भी बनाए।

लेकिन फिर भी उसे संतोष नहीं हुआ। तब उसने ज्ञान का नेत्र खोलकर सुदूर भविष्य में देखा। अंधकार में पृथ्वी और सौर–लोक पर छाई हुई प्राणहीन धुंध में कहीं एक हलचल, फिर उस हलचल में धीरे–धीरे एक आकार, एक शरीर जिसमें असाधारण कुछ नहीं हैं, फिर भी सामर्थ्य है, एक आत्मा जो निर्मित होकर भी अपने आकार के भीतर बंधती नहीं, बढ़ती ही जाती है। एक प्राणी जो जितनी बार धूल को छूता है, नया हो होकर, अधिक प्राणवान् होकर उठ खड़ा होता है।[9]

2. 'दूर से देखा जाय तो मानवता का सारा विकास ही, कम से कम अभी तक यही है। मानवता कुछ चाहती है, लेकिन जानती नहीं कि क्या और उसे जानने की खोज में अनेक रास्तों पर एक साथ ही भटक रही है ..... मानो सारी मानवता, अपने जीवन की गति में किसी दीर्घ वयःसंधि पर खड़ी है और अपने से उलझ रही है, उसका यौवन, उसके कृतित्व के दिन अभी आगे हैं।[10]

साथ ही अज्ञेय की भाषा सारगर्भित और उक्तिपूर्ण भी है। जब वे पात्रों के अलक्ष्य एवं गहन मनोभावों को शब्दबद्ध करने या संकेत द्वारा स्पष्ट करने का प्रयत्न करते हैं तब अज्ञेय की भाषा जटिल हो जाती है। जैसे–'तुम्हारे लिए नहीं, जिसका भविष्य आगे है, भविष्य को सुनहला हो, जिसमें हंसी हो, बालरुण की आभा हो, आलोक हो, मैं जैसे तमिस्त्रा का पोश्य पुत्र हूँ– इसलिए आलोक को पूजता आया हूँ। कभी दूर से, जैसा कि ठीक है, कभी निकट से जैसा कि विपज्ज–नक है, कभी छूने को ललचाया हूँ, जो महान मूर्खता है; क्योंकि छूने से आलोक बुझ जाता है।'[11]

अंत में हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अज्ञेय के उपन्यासों की भाषा में दार्शनिकता, काव्यात्मकता, भावरम्यता, सूक्तिमयता तथा प्रतीक–योजना के कारण ऐसा सामर्थ्य उत्पन्न हो गया है कि इसे हिन्दी के प्रौढ़ व समर्थ गद्य के उत्कृष्ट उदाहरण–स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है। अज्ञेय के उपन्यासों में अधिकांश प्रौढ़, मंजी हुई तथा समर्थ भाषा का प्रयोग हुआ है। जैसे–बाहर खुली चाँदनी छिटकी थी, इतनी प्रोज्वल कि निरभ्र आकाश में भी तारा एक–आध दिखता था। झील चमक रही थी। रंगों का वह खेल केवल एक रंग, श्वेत का खेल–बल्कि केवल मात्र प्रकाश का और उसकी अनुपस्थिति का वह खेल देखकर शेखर स्तब्ध रह गया। झिलमिलाती हुई झील पर धुंधले श्यामल पहाड़ और दूर पर कुहरे–सी मधुर स्निग्ध ज्योतिर्मयी हिमश्रेणी ..... उस विस्तीर्ण, अत्यंत निस्तब्ध रात में इस दृश्य को दिखते हुए बोध की लहरें–सी उसके शरीर में दौड़ने लगीं, मानो वह इस जीवन के स्वप्न से उद्‌बुद्ध होकर किसी ऊँची यथार्थता के लोक में चला जा रहा है ..... उसे रोमांच हो आया। उसने आँखे मूँद ली मानो आँखे मूँदकर ही वह इस दृश्य को बनाये रख सकता है, खुली आँखों के आगे वह छिन्न हो जाएगा।[12]

अज्ञेय के उपन्यासों में हमारी भाषा अनोखी, सादगी, स्वाभाविकता, स्वच्छता, कांति और परिपूर्णता लिये हुए दिखाई पड़ती है। उसका प्रत्येक शब्द मानो हाल ही में टकसाल से ढल कर नई चमक तथा व्यंजकता लेकर आगत हुआ।[13]

देशकाल और वातावरण की वर्णन शैली – औपन्यासिक तत्वों में देशकाल और वातावरण का भी एक अपना महत्वपूर्ण स्थान हे, क्योंकि विचारक यही कहते हैं–''प्रत्येक साहित्यकार अपने युग का सच्चा प्रतिनिधि है और उसकी रचनाओं में उस काल के जन–जीवन का सच्चा चित्र उपस्थित रहता है। इसी प्रकार उपन्यास की रचना देश और काल के घेरे में बँधकर आगे बढ़ती है। प्रत्येक उपन्यास के चरित्रों का जीवन शून्य में न होकर समाज के रहन–सहन, आचार–विचारों तथा बाह्य परिस्थितियों से अवश्य प्रभावित होता है। जीवन की स्मरणीय दशा और घटना उपन्यासकार के समस्त व्यक्तित्व को प्रभावित करती है। संग–संग यह भी कहा जा सकता है कि, वातावरण पात्रों का संसार है, वहीं रहकर वे अपने क्रियाकलापों का परिचय देते हैं। या यों कहिए उपन्यास में पात्रों के कथोपकथन तथा क्रियाकलाप को छोड़कर शेष सामग्री देशकाल या वातावरण से संबंध रखती है। देशकाल के अन्तर्गत कथा के सभी बाह्य उपकरण उसकी योजना में सहायता प्रदान करने वाले पात्रों के आचार–विचार, राजनीति तथा रहन–सहन, प्राकृतिक पीठिका और परिस्थिति में आ जाते हैं। इस प्रकार वातावरण की सृष्टि में मुख्यतया दो तत्वों का ह्रास रहता है–उसमें रहने वाले मनुष्यों तथा मनुष्येतर जगत।''[14]

सामान्यतया देशकाल और वातावरण के दृष्टिकोण से अज्ञेय के उपन्यासों का मूल्यांकन करते समय हमारे सामने सर्वप्रथम दो महत्वपूर्ण प्रश्न उठते हैं कि रचना में कौन–सा देशकाल या परिवेश अंकित है और वह अंकन किस हद तक सही है। सच्चाई तो यह है कि इन्हीं प्रश्नों के आधार पर रचना की उत्कृष्टता या निकृष्टता निश्चित की जाती है और पूर्णतः यही आशा की जाती है कि उपन्यास–जो कि किसी भी युगीन जीवन का सही कलात्मक चित्र होता है – में उसका परिवेश पूर्णरूपेण सही–सही चित्रित होगा। इस तरह अज्ञेय के प्रथम उपन्यास 'शेखर : एक जीवनी' का रचना–काल एवं प्रकाशन स्वतंत्रतापूर्व का है और हमें इस उपन्यास में स्वतंत्रता पूर्व भारत में व्याप्त जाति–धर्म, अन्धविश्वास,. वैषम्य, पारिवारिक रूढ़िवादिता, पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण की प्रवृत्ति, क्रान्तिकारी आन्दोलन, स्वार्थपरता, ह्रासोन्मुख उच्च वर्ग तथा राष्ट्रीय चेतना

आदि अच्छी–बुरी परिस्थितियों के बहुत ही सच्चे एवं हृदय–विदारक चित्र प्राप्त होते हैं। यह अवश्य है कि उनका अंकन अकेला व्यक्ति शेखर के सन्दर्भ एवं संबंध में हुआ है, पर वैयक्तिकता का अधिकाधिक चित्रण होते हुए भी 'शेखर : एक जीवनी' देश काल के तत्व से वंचित नहीं है।

यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो अज्ञेय ने अपने सभी उपन्यासों में परिवेश सृजन पूर्ण कुशलता से किया है। उन्होंने वातावरण का सृजन किन्हीं विशेष उद्देश्य की पूर्ति हेतु किया है। मनोविश्लेषणात्मक विधि को अपनाते हुए उन्होंने पात्र की मनोदशा के चित्रण के लिए, भावी घटना की सूचना या पात्र के मनोभावों के चित्रण के लिए उचित वातावरण का सृजन किया है। उदाहरणार्थ 'शेखर : एक जीवनी' में शेखर की दार्शनिक एवं गंभीर मनःस्थिति का चित्रण करने के लिए समुद्र के गम्भीर नाद का वर्णन कर अनुरूप परिवेश का सृजन किया गया है – ''जब समुद्र का गंभीर नाद उन्हें सुनाई पड़ने लगा तब सन्ध्या हो चुकी थी और आकाश में ललिमा अधिक घनी होकर ज्योतिहीन होने लगी थी। वे कुछ जल्दी चलने लगे और थोड़ी देर में तट पर पहुँचकर, एक चट्टान की आड़ में समतल रेत पर बैठकर लहरों की ओर देखने लगे। देखते–देखते आकाश में सन्ध्या का अन्तिम प्रकाश भी बुझ गया। .... अन्धकार में समुद्र की ओर देखता हुआ शेखर सोच रहा था .... और जाने कहाँ से वह विशाल गम्भीर घोष–सा हो रहा था–लहरों के स्वर से अधिक भारी, धीर .....।''[15]

अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में पात्रों की मनःस्थिति–चित्रण के अलावा भावाभिव्यक्ति के लिए भी प्राकृतिक माहौल को उपजाया है और ऐसी जगहों पर उन्होंने भावानुकूल प्राकृतिक छटा का चित्रण भी किया है। जैसे – 'नदी के द्वीप' में रेखा के मदालस भाव का चित्रण करने के लिए अज्ञेय ने प्राकृतिक छटा का वर्णन करते हुए कहा है – ''काले बादलों के नीचे सारा दृश्य घुटकर बन्द हो जाता है, पेड़–पौधे छोटे हो जाते हैं, बंगला खिलौना–सा बन जाता है। मानो पूरा दृश्य अजायब घर के काँच के शो–केश में रखा हुआ एक माडेल हो। केवल पहाड़ उभरकर बड़े भारी और तीखे जो जाते हैं, जैसे आकाश के तेवर चए गए हो, ... यह अलसाना भाव ही पहाड़ के शरदारम्भ का पहला और सबसे प्रीतिकर चिन्ह होता है – सबसे प्रीतिकर भी, लेकिन साथ ही एक विशेष प्रकार की व्याकुलता लिये हुए ... उस व्याकुलता की रेखा नाम देना नहीं चाहती, नाम देना आवश्यक भी नहीं है; क्योंकि धमनियों से उसकी अकुलाहट के साथ ही मन में जो विचार या वांछा–चित्र उठते हैं, वे अपने आप में सम्पूर्ण होते हैं।''[16]

यही नहीं, अज्ञेय ने पात्रों के भावानुरूप परिवेश के सृजन हेतु गीतों और कविताओं का भी उपयोग किया है तथा 'शेखर : एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' में अंग्रेजी, पंजाबी, बंगाली तथा हिंदी के अनेक कविताओं एवं गीतों आदि के उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। उदाहरणार्थ, 'शेखर : एक जीवनी' का यह अंश दर्शनीय है– ''फिर एक सूनापन उनके मन में छा गया, आंखें अनदेखी हो गई ..... उस शून्य में वह धीरे–धीरे शशि से सुने शब्द गुनगुनाने लगा– 'दुख साड्डा समझनगे, दो पत्थर पहाड़ाँ दे–'

'पत्थर क्यों समझेंगे दुख'–शायद यही अभिप्राय है कि उस दुख को कोई नई समझ सकता, दो पत्थर पहाड़ा दे.....किन्तु पत्थर पहाड़ों के हैं, जिन्होंने सदियों तक बर्फीली आंधियों के प्यासे प्यार के नीचे चोटियों को छीजते देखा है, जो अभिमान किये ऊँचे–ऊँचे उठे हैं और अहंकार की तरह ढह गये– पहाड़ों के पत्थर शायद सचमुच दुःख को समझ सकते हों–'दुख साड्ढा समझनगे, दो पत्थर पहाड़ाँ दे.....।''[17]

उपन्यासकार का व्यक्तिगत अभिमत :– अज्ञेय के दृष्टिकोण के संबंध में आवश्यकता से अधिक मतभेद है और आलोचकों का एक बृहद झुण्ड जिसमें से कोई उन्हें कुण्ठावादी, निराशावादी, व्यक्तिवादी, पलायनवादी, अतियौनवादी, अहंवादी तथा कुछ समाजविरोधी इत्यादि तरह–तरह के विशेषणों से विभूषित करता है। मात्र यही नहीं, दुर्गाशंकर मिश्र के अनुसार, डॉ. चण्डीप्रसाद जोशी सदृश समीक्षक यह भी कहते हैं– ''अज्ञेय समाज की जड़ों को ही काट डालना चाहते हैं, उनका व्यक्तिस्वातंत्र्य समाजसापेक्ष नहीं, वरन् अराजकतावादी है।''[18] किन्तु वे अज्ञेय पर लगाये गये आरोपों से सहमत नहीं है। दुर्गाशंकर मिश्र कहते हैं कि ''एकांगी निजी दृष्टिकोण रखकर ही जो समीक्षक अज्ञेय के उपन्यासों का अध्ययन करते हैं, वही इस प्रकार के मात व्यक्त करते हैं, अन्यथा अज्ञेय के उपन्यासों में अभिव्यक्त, विचारों के लिए लेख को दोषी मानना उचित नहीं है कि अनास्था के युग में शेखर का अराजकतावादी होना चौंकाने वाली बात नहीं है। अज्ञेय के उपन्यास भारतीय समाज के एक वर्ग की परिस्थिति को चित्रित करते हैं। यह वर्ग अतिशय व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को अपनाए हुए है।''[19] यही कारण है कि अज्ञेय के औपन्यासिक पात्रों की समाज के प्रति विद्रोहात्मक प्रतिक्रिया होती है। शेखर जन्म से

विद्रोही प्रवृत्ति का है, इसलिए वह समाज तथा परिवार की सत्ता–स्वीकार न करें, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि उपन्यासकार समाज के प्रति पूर्णतः ध्वंसात्मक दृष्टि रखते हैं। अज्ञेय का कहना है– 'जो रोष आदर्श के लिए है, वह धर्म है, यह तो तय है। रहा यह है कि आदर्श क्या है, तो उसके बारे में साधारण नियम कठिन है, पर कहा जा सकता है कि जो भी भावना मानव और मानव के भेद मिटाने की, उसकी सीमाओं और बंधनों को अधिकाधिक प्रसारित करने की चेष्टा करती है, वह आदर्श है।''[20]

सामान्यतः औपन्यासिक रचना–तत्वों के दृष्टिकोण से अज्ञेय के उपन्यासों का अध्ययन करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि वस्तु और शिल्प–कौशल इन दोनों ही दृष्टियों से अज्ञेय की उपलब्धियाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जो वस्तुतः हिन्दी उपन्यास साहित्य की गरिमा में सहायक भी हुई हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अज्ञेय के उपन्यासों में उनके साहित्यिक दृष्टिकोण का एक अद्वितीय और गहरी समझ उत्पन्न होती है। उनके रचनात्मक दृष्टिकोण ने हिंदी उपन्यास लेखन को नया आयाम दिया और उन्हें समकालीन साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलवाया। उनके उपन्यासों में दिखाए गए मानसिक संघर्ष, आंतरिक द्वंद्व और अस्तित्ववादी चिंताएँ केवल व्यक्तिगत स्तर पर ही नहीं, बल्कि समग्र समाज में व्याप्त मूल्यों और विचारधाराओं के प्रति भी आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। अज्ञेय ने जीवन के प्रति अपने जटिल दृष्टिकोण को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया, जहाँ उन्होंने मनुष्य के आंतरिक और बाहरी संघर्षों को शहरी, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में व्यक्त किया। उनका लेखन केवल एक लेखक के व्यक्तिगत विचारों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह समाज के विभिन्न वर्गों और उनके मानसिक संकटों का भी बारीकी से विश्लेषण करता था। उनकी शैली में एक अद्वितीय नयापन और गहराई है, जो पाठकों को न केवल सामाजिक वास्तविकताओं से रूबरू कराती है, बल्कि उनके मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी गहरी छाप छोड़ती है। अज्ञेय के उपन्यासों में जीवन और अस्तित्व के सवालों का एक निरंतर अन्वेषण दिखता है, जो उनके लेखन को कालातीत और विचारशील बनाता है। इस प्रकार, अज्ञेय का साहित्य हिंदी साहित्य का अभिन्न हिस्सा बन चुका है और उनके उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टि से मूल्यवान हैं, बल्कि वे मानव जीवन, समाज और अस्तित्व के गहरे अर्थों पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं। उनका योगदान हिंदी साहित्य में आज भी प्रासंगिक है और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अमूल्य धरोहर के रूप में बना रहेगा।

संदर्भ –

[1] दुर्गाशंकर मिश्र – अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ 33
[2] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी (प्रथम खण्ड), पृष्ठ 223–23
[3] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 47
[4] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 37
[5] डॉ. प्रतापनारायण टण्डन – हिन्दी उपन्यास में कथा–शिल्प का विकास, पृष्ठ 336
[6] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 134
[7] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 25
[8] अज्ञेय – नदी के द्वीप, पृष्ठ 19
[9] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 86–87
[10] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 123–124
[11] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 104–105
[12] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 27
[13] डॉ. देवराज उपाध्याय – आधुनिक समीक्षा, पृष्ठ 138
[14] दुर्गाशंकर मिश्र – अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ 36
[15] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 87
[16] अज्ञेय – नदी के द्वीप
[17] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 221–22

[18] डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र – अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ 41
[19] डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र – अज्ञेय का उपन्यास साहित्य, पृष्ठ 56
[20] अज्ञेय – शेखर : एक जीवनी, पृष्ठ 55